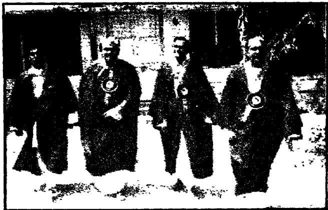
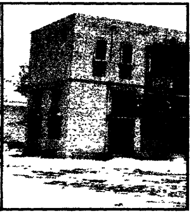
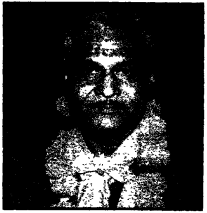




बाए से दाए – श्री सूर्यदेव–कुलाधिपति, डॉ० धर्मपाल–कुलपति,
प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री–उपकुलपति, श्यामनारायण सिह–कुलसचिव



गुरुकुल के वर्तमान कुलपति डा० धर्मपाल



कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हरिद्वार



गुरुकुल (स्थापना के समय में गंगा पार)

कुलपति की ओर से

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। भविष्य की अपार संभावना को समेटे बीज से पल्लवित आज वट-वृक्ष रूप मे खड़ा यह गुरुकुल अतीत के स्वर्णिम चित्रों को अपने वक्ष में समाहित किये हुए है।

गुरुकुल एक जीता-जागता आन्दोलन है। युवकों में पनपता जोश तथा देशभक्ति इस आन्दोलन के स्वर है। सस्कार तथा मर्यादाये गुरुकुल की माटी से युवको को सरावोर करती है। स्वामी श्रद्धानन्द का गुरुकुल के बारे मे स्वप्न था कि यह विद्यामदिर प्राचीन एव आधुनिक विषयों का सुन्दर समायोजन केन्द्र बने। वे राष्ट्रवादी युवको एवं युवतियों की ऐसी श्रंखला तैयार करना चाहते थे, जो प्राच्य विद्याओं के गहन ज्ञान से समावृत हो तथा आधुनिक विषयो का समावेश भी उनकी ज्ञान पिपासा को अभिसिंचित करता रहे। आज गुरुकुल मे जहा वेद, दर्शन, सस्कृत, प्राचीन भारतीय इतिहास एव सस्कृति के अध्ययन की व्यवस्था है वहा कम्प्यूटर शिक्षा, गणित, भौतिकी, रसायन पर्यावरण विज्ञान तथा प्रबन्ध शिक्षा के शिक्षण की भी उच्चतम व्यवस्था है। गुरुकुल मे पढने वाला प्रत्येक छात्र भारतीय सस्कृति, धर्म एव दर्शन की मूल अवधारणाओं को जान सके, इसलिये धर्म, दर्शन एव सस्कृति का पाठ्यक्रम सभी छात्रों के लिये अनिवार्य बनाया गया है।

गुरुकुल के समग्र स्वरूप को संक्षेप में जनमानस के सामने रखने की आवश्यकता को महसूस किया गया तथा डा० जगदीश विद्यालकार पुस्तकालयाध्यक्ष को यह सुझाव दिया गया कि वे इस प्रकार की एक पुस्तिका तैयार करे जो गुरुकुल की सम्पूर्ण गतिविधियों को रेखाकित करे। उन्होने इस सुझाव के अनुसार आचार्य डा० विष्णुदत्त जी राकेश के परामर्श से इस कार्य को सुचारू रूप से सम्पन्न किया, इस हेतु डा० विद्यालंकार को मेरा आशीर्वाद। मैं आशा करता हू कि गुरुकुल का परिचयात्मक विवरण सभी के लिये उपयोगी होगा।

डा० धर्मपाल

कुलपति

गुरुकुल के वर्तमान अधिकारी

कुलाधिपति	-	श्री सूर्यदेव
कुलपति	-	डा० धर्मपाल
आचार्य एवं उपकुलपति	-	प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री
कोषाध्यक्ष	-	श्री हरवंश लाल शर्मा
कुलसचिव	-	प्रो० श्यामनारायण सिंह
डीन, प्राच्य विद्या संकाय	-	डा० जयदेव
डीन, मानविकी संकाय	-	प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री
डीन, विज्ञान संकाय	-	प्रो० एस०एल०सिंह
डीन, जीव विज्ञान संकाय	-	प्रो० डी०के० माहेश्वरी
डीन, प्रबन्धन संकाय	-	श्री एस०सी० धमीजा
डीन, प्रौद्योगिकी संकाय	-	प्रो० विनोद कुमार
वित्त अधिकारी	-	श्री जयसिंह गुप्ता
पुस्तकालयाध्यक्ष	-	डा० जगदीश प्रसाद विद्यालंकार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-२४९४०७
(डीम्ड यूनिवर्सिटी)

पाठ्यक्रम : एक नजर में

१. अलंकार (वेदालंकार/विद्यालंकार-बी.ए.) - त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम
२. बी.एस.सी. (गणित, बायो, कंप्यूटर, इंडस्ट्रियल माइक्रोबायोलोजी, स्टेटिस्टिक्स ग्रुप)
३. एम.ए. (वेद, संस्कृत, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व, योग, हिन्दी अंग्रेजी, मनोविज्ञान)
४. एम.एस.सी. (गणित, भौतिकी, रसायन, माइक्रोबायोलोजी तथा पर्यावरण विज्ञान)
५. एम.बी.ए. (दो वर्षीय स्नातकोत्तर उपाधि)
६. एम.सी.ए. (तीन वर्षीय स्नातकोत्तर उपाधि)
७. कार्मिक प्रबध (दो वर्षीय डिप्लोमा)
८. पी.एच.डी. (एम.ए., एम.एस.सी. के सभी विषय)
९. स्नातकोत्तर योग डिप्लोमा (एक वर्षीय), योग डिप्लोमा (तीन मास)
१०. हिन्दी पत्रकारिता स्नातकोत्तर डिप्लोमा (एक वर्षीय)
११. अंग्रेजी दक्षता डिप्लोमा (एक वर्षीय)
१२. वैदिक यज्ञ विधान कर्मकांड डिप्लोमा (एक वर्षीय)
१३. संस्कृत प्रवेश तथा संस्कृत प्रवीण (एक वर्षीय डिप्लोमा)

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून (अंगभूत महाविद्यालय - द्वितीय परिसर)

१. अलकार/विद्यालकार (बी.ए.) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम
२. एम.ए. (हिन्दी, सस्कृत, अग्रेजी)
३. एम.सी.ए. (तीन वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम)
४. एम.बी.ए. (द्विवर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम)
५. कार्मिक प्रवध (दो वर्षीय डिप्लोमा)

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय रुड़की बाईपास रोड़, हरिद्वार (अंगभूत महाविद्यालय)

१. एम.ए. (सस्कृत, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एव पुरातत्व, हिन्दी अग्रेजी मनोविज्ञान)
२. एम.एस.सी. (गणित, भौतिकी, रसायन, माइक्रोबायोलोजी तथा पर्यावरण विज्ञान)

गुरुकुल - संकल्प की सतत् साधना

नवजागरण के प्रणेता महर्षि दयानन्द ने जाति, धर्म तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के भेद से रहित जिस अनिवार्य और समानता से पूर्ण विविध ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था की परिकल्पना की थी, उसे शिष्य और गुरु के आत्मीय सम्बन्धों पर आधारित आचार्य कुल के रूप में साकार करने का संकल्प लगभग १०० वर्ष पूर्व अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने किया। स्वामी जी ने दयानन्द के निर्वाण के ठीक तेरह वर्ष बाद सद्धर्म प्रचारक में देश की ध्येयच्युत सतति को आर्य बनाने की योजना पर लेख लिखने प्रारभ किये और राष्ट्रवादी लोगों की बढती हुई माग पर गुरुकुल की स्थापना को मूर्त रूप देने का उपक्रम शुरू किया। स्वामी जी के सामने प्राचीन भारत के आचार्य कुलों की तरह विराट तथा ऐतिहासिक परम्परा थी, जिसमें न केवल शिक्षा ही निःशुल्क होती थी, अपितु भोजन, आवास तथा वस्त्रादि के लिये भी कोई शुल्क नहीं लिया जाता था। ब्रह्मचर्य और तप जिस प्रणाली के मुख्य आधार थे तथा जहां धनी और दरिद्र सभी को तुल्य वस्त्र, समान आसन, आवास, समान भोजन तथा समान शिक्षा दी जाती थी। स्वामी जी राष्ट्रवादी नवयुवकों और कन्याओं की वह पीढ़ी तैयार करना चाहते थे जो आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में पारंगत होने के साथ-साथ पारम्परिक ज्ञान में दक्ष हो तथा भारत के स्वतंत्र और रचनात्मक विकास में अपनी मौलिकता के साथ खडी हो सके। पराधीन भारत के शासकों ने राष्ट्रीय इतिहास को तोड मरोड़कर परम्परागत संस्कृति का जो धूमिल चित्र प्रस्तुत किया था, उसने नवयुवकों में मानसिक दासता तथा हताशा की घुटन पैदा कर दी। दयानन्द ने भारतीय इतिहास की पुनर्रचना की आवश्यकता पर बल दिया। अत: स्वामी जी ने गुरुकुल में वैदिक साहित्य तथा प्राचीन भारतीय इतिहास के अन्वेषण तथा शोध की व्यवस्था को मुख्य रूप से अपनाया। ब्रह्मचर्य, शारीरिक श्रम, प्राणायाम, सध्योपासना, अग्निहोत्र, सदाचार, स्वाध्याय तथा समाजसेवा को शिक्षा का, पुस्तकीय शिक्षा के अलावा अनिवार्य अंग बना देना गुरुकुल की अपनी विशेषता तो थी ही, तत्कालीन शिक्षा के क्षेत्र में यह एक अत्यंत क्रान्तिकारी योजना भी थी।

गुरुकुल की स्थापना एवं उद्देश्य

स्थापना :

लाला मुंशीराम (श्रद्धानन्द जी का पूर्व नाम) जी ने अपने दोनों पुत्र हरिश्चन्द्र और इन्द्र चन्द्र को गुरुकुल में प्रविष्ट कराया। ये गुरुकुल के पहले ब्रह्मचारी थे। आचार्य पद पर व्याकरण तथा दर्शनशास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान् पण्डित गंगादत्त जी को नियुक्त किया गया। मुशीराम जी को यह स्थान प्राचीन गुरुकुलों के अनुरूप प्रतीत नहीं हुआ। यह उपयुक्त स्थान की तलाश में हरिद्वार आये। भगवती श्रुति उनका मार्गदर्शन कर रही थी। यजुर्वेद में कहा गया - "उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् धिया विप्रो अजायत्" जहाँ नदियों का संगम हो, पर्वत की उपत्यका हो वहीं विद्या साधकों की बुद्धि का समुचित विकास होता है। प्राचीन भारत में भी प्रयाग स्थित गंगा-यमुना के संगम पर महर्षि भारद्वाज का आचार्य कुल था और कुलपति कण्व शिवालिक की तराई में हस मिथुनों से कूजित मालिनी के तट पर अपने कुल की कीर्तिपताका दिगन्तव्यापी यज्ञधूम के साथ फहरा चुके थे। हरिद्वार से पाच मील गगा के पूर्वी तट पर घने जगलों के बीच साफ किये

गये लगभग दो बीघे मैदान में फूस के छप्परों के बीच २ मार्च, १६०२ को गुरुकुल की स्थापना हुई। कागडी ग्राम का यह हरित अचल सरस्वती का प्रधान केन्द्र बन गया। महात्मा मुशीराम इस कुल के पिता थे। गुरुकुल की निरन्तर बढ़ती हुई लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि १६१० में उत्तर प्रदेश, बिहार, गुजरात, पंजाब, सिंध तथा राजस्थान से १३० के लगभग बालक प्रवेश के लिये आये। जिनमें से योग्यता के आधार पर केवल २५ को ही प्रविष्ट किया जा सका। काशी के मूर्धन्य विद्वान् पण्डित पद्मसिह शर्मा, इंग्लैड से ऐलोपैथी की उच्च उपाधि प्राप्त डा० चिरजीव भारद्वाज, आचार्य रामदेव तथा विज्ञान पर हिन्दी में उच्चस्तरीय पुस्तक लिखने वाले श्री गोवर्धनशास्त्री, वनस्पति शास्त्री के हिन्दी लेखक महेश चरण सिन्हा, श्री रामदास गौड़ तथा वेदों के उद्भट व्याख्याता श्रीपाद दामोदर सातवेलकर गुरुकुल में प्राध्यापक थे।

महात्मा मुंशीराम महर्षि दयानन्द सरस्वती के सच्चे उत्तराधिकारी शिष्य थे। महर्षि के शिक्षा सूत्रों को आधुनिक परिदृश्य में ढालकर वह भारतीय शिक्षा पद्धति को नवीन दिशा देने के लिये कटिबद्ध हो उठे। १८६२ में आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान निर्वाचित होने पर उन्होंने गुरुकुल की स्थापना का संकल्प लिया, आर्य मुसाफिर नाम से उर्दू पत्र निकालने की योजना बनाई तथा १६०० में चालीस हजार रुपये दान रुप में एकत्र कर अपनी भीष्म प्रतिज्ञा पूर्ण की। वेद को केन्द्र बनाकर आधुनिक ज्ञान विज्ञान के अध्ययन और अनुसंधान की प्रेरणा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका द्वारा दे दी थी पर उसका क्रियान्वयन स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल के माध्यम से कराया, वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य तथा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन-अध्यापन के केन्द्र के रूप में गुरुकुल की स्थापना कर स्वामी श्रद्धानन्द ने युगान्तकारी कार्य किया। १६ मई, १६०० को गुजरावाला में पूर्वस्थापित वैदिक पाठशाला के साथ ही गुरुकुल की स्थापना कर दी गई तथा २२ अक्टूबर १६०१ में गगापार मुशी अमनसिह द्वारा कागडी गाव की चौदह सौ बीघे भूमि दान में प्राप्त होने पर २ मार्च १६०२ को महात्मा मुंशीराम गुरुकुल को कांगडी ले आए। इस प्रकार से २ मार्च १६०२ को गुरुकुल, गुरुकुल कागड़ी बन गया।

उद्देश्य :

१. ब्रह्मचर्य का पुनरुद्धार
२. ब्रह्मचारियों तथा उनके गुरुओं में पुत्र-पिता का सबध
३. पाश्चात्य परीक्षा पद्धति के दोषों से मुक्त परीक्षा विधि
४. पाठविधि में संस्कृतभाषा, वेद-वेदाग, सत्यशास्त्रों तथा आर्य भाषा हिन्दी की प्रमुखता
५. विद्यार्थियों की शारीरिक उन्नति के लिये विशेष प्रयत्न करना
६. अग्रेजी भाषा तथा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को पाठ्यक्रम में समुचित स्थान प्रदान करना
७. नि:शुल्क शिक्षा
८. प्राचीन भारतीय इतिहास के अन्वेषण तथा पुनर्लेखन की व्यवस्था करना।

स्वाधीनता आन्दोलन में सहयोग

गुरुकुल का स्वाधीनता पूर्व का इतिहास जहा स्वतत्रता के लिये जेल भरने वाले राष्ट्रवादी उत्साही नवयुवकों का इतिहास है, वहीं वेद-वेदाग तथा आधुनिक

ज्ञान-विज्ञान में पूर्ण दक्षता प्राप्त करने वाले मनस्वी विद्वानों का भी इतिहास है। वह युग निर्माता हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी पत्रकारिता के प्रशिक्षुओं का इतिहास है, तो समाज सेवा और उद्यम के क्षेत्र में उपलब्धिया हासिल करने वाले जोखिम भरे संघर्षी युवकों का भी इतिहास है। आयुर्वेद, वेद, धर्म, दर्शन, साहित्य, इतिहास तथा सामाजिक-राजनीति अध्ययन के क्षेत्र में गुरुकुल के स्नातकों ने अग्रणी भूमिका निबाही है।

ब्रिटिश शासन के विदेशी प्रभाव से मुक्त रहकर राष्ट्रीयतावादी विचारों के धनी युवकों का निर्माण गुरुकुल का प्रमुख उद्देश्य था। अतः गुरुकुल उन भारतीय विश्वविद्यालयों से सर्वथा भिन्न था जिनके अध्यापक, पुस्तकें, पाठ-विधि, उपाधियां सभी अंग्रेजी सरकार द्वारा समर्थित तथा सहायता प्राप्त होते थे। यह संस्था सरकार से किसी भी प्रकार की सहायता नहीं लेती थी। दीनबधु एण्ड्रूज, महात्मा गांधी तथा लेबरपार्टी के नेता और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रोमजे मैकडोनल्ड गुरुकुल आये तथा यहा की गतिविधियों को देखकर भावविभोर हो गये। महात्मा गाधी तो गुरुकुल से इतने प्रभावित थे कि अफ्रीका के फेनिक्स आश्रम के विद्यार्थियों के साथ जब वह भारत आये तो अहमदाबाद में अपने पृथक आश्रम के खुलने तक वह गुरुकुल में ही रहे। १९३० के सत्याग्रह आन्दोलन, १९३२ के सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में गुरुकुल के अध्यापकों तथा छात्रों ने भाग लेकर यह प्रमाणित कर दिया कि शिक्षा को राष्ट्रीय आवश्यकताओं से अलग-अलग करके नहीं रखा जा सकता। मूल्याधारित शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल का जहा अनूठा योगदान रहा है, वहा स्वाधीनता की लड़ाई में भी उसकी क्रान्तिकारी भूमिका रही है।

आश्रम व्यवस्था

विद्यालय विभाग में प्रविष्ट प्रत्येक बालक का आश्रम में रहना अनिवार्य है और गुरुकुल की मूलभूत विशेषता है। प्रत्येक श्रेणी का एक अधिष्ठाता रहता है, जिसके निरीक्षण में पूर्व नियत किये गये श्रेणी के विद्यार्थी नित्यकर्मों का पालन प्रातः ४.३० बजे से रात्रि के १० बजे तक करते हैं। ब्रह्मचारियों के भोजन, वस्त्र, चिकित्सा, अध्ययन, मनोरंजन तथा खेलकूद आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था विद्यालय की ओर से की जाती है, परन्तु इसका व्यय अभिभावकों को वहन करना पड़ता है। अनुमानित रूप से सम्पूर्ण व्यवस्था पर मासिक व्यय ६०० रूपये के लगभग होता है। सभी ब्रह्मचारियों को सन्ध्या, हवन, योगाभ्यास, क्रीड़ा, व्यायाम तथा कलात्मक कार्यक्रमों में अनिवार्य रूप से भाग लेना पड़ता है।

शिक्षण काल तथा उपाधि

गुरुकुल का स्नातक शिक्षण कला १५ वर्ष का है। प्रथम १२ वर्षों तक विद्यालय विभाग तथा अगले वर्षों में महाविद्यालय का स्नातक पाठ्यक्रम पूर्ण हो जाता है। स्नातक शिक्षा के पश्चात् विभिन्न विषयों में दो वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम है। उच्चतर अध्ययन तथा गवेषणात्मक कार्यों के लिये हिन्दी, संस्कृत, वेद, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति, योग, मनोविज्ञान, अंग्रेजी साहित्य, भौतिकी, रसायन शास्त्र, गणित, सूक्ष्म जीव विज्ञान, पर्यावरण एवं कम्प्यूटर में शोध उपाधि प्राप्त करने की व्यवस्था है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की संस्तुति पर भारत सरकार ने जून

१९६२ में गुरुकुल को विश्वविद्यालय का स्तर प्रदान किया, अत गुरुकुल कागड़ी की सभी उपाधिया देश के अन्य विश्वविद्यालयों के समान ही मान्यता प्राप्त है। गत वर्ष से विश्वविद्यालय में यू०जी०सी० की स्वीकृति से प्रबंध शिक्षा का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ हो गया है।

गुरुकुल के प्राचीन स्नातक

वेद, दर्शन, व्याकरण, साहित्यालोचन, इतिहास, जीवनचरित्र, राजनीति, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद आदि विषयों पर स्नातकों ने उच्च कोटि के ग्रन्थ लिखकर साहित्यिक संस्थाओं तथा सरकार से पुरस्कार प्राप्त किये। इनमें प्रमुख हैं - पं० जयचन्द्र विद्यालकार, पं० अत्रिदेव विद्यालंकार, प्रो० ब्रह्मदत्त आयुर्वेदालकार, पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, डा० रामनाथ वेदालंकार, प्रो० सत्य भूषण वेदालंकार, डा० कृष्ण कुमार आयुर्वेदालंकार, डा० सत्यकाम आयुर्वेदालंकार तथा डा० प्रशान्त कुमार वेदालंकार नाम उल्लेखनीय है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में तो गुरुकुल के स्नातकों का स्थान बहुत ही प्रतिष्ठित है। यह कहना गलत नहीं होगा कि "बीसवी सदी" के मध्य भाग तक हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ पत्रकारों में गुरुकुल कांगडी के स्नातक सबसे अधिक सख्या में थे। पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति, प० सत्यदेव विद्यालंकार, पं० भीमसेन विद्यालकार, पं० नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, पं० क्षितिश वेदालंकार आदि कितने ही नाम हैं जो हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में सदा प्रतिष्ठा के साथ स्मरण किये जायेंगे।

व्यापार, व्यवसाय और उद्योगों के क्षेत्र में भी गुरुकुल के अनेक स्नातकों ने बहुत उन्नति की। पं० सत्यदेव विद्यालंकार, केनिया (पूर्वी अफ्रीका) में जाकर सफल व समृद्ध उद्योगपति बने। उनकी गिनती अब पूर्वी अफ्रीका के बडे उद्योगपतियों में की जाती है और इग्लैंड एव भारत में भी उनके अनेक बडे-बडे कारखाने विद्यमान हैं।

प० विवेकानन्द विद्यालकार और पं० युधिष्ठिर विद्यालकार ने फिल्म निर्माण तथा सिनेमा उद्योग में अच्छा नाम कमाया।

राजनीतिक क्षेत्र में भी गुरुकुल के अनेक स्नातक पर्याप्त रूप से सफल हुए। देश की स्वाधीनता के लिये जो भी सघर्ष बीसवीं सदी के द्वितीय चरण में काग्रेस के नेतृत्व में हुए सभी में गुरुकुल के स्नातकों व विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पं० अमरनाथ विद्यालकार, पं० विनायकराव विद्यालकार, प० शकरदेव विद्यालकार और प० दीनदयाल शास्त्री विविध राज्यों की मत्री परिषदों के सदस्य रहे और कितने ही गुरुकुल के स्नातक भारत की संसद तथा राज्यों के विभिन्न मण्डलों के सदस्य निर्वाचित हुए।

वेद-वेदागों के क्षेत्र में गुरुकुल के स्नातकों में चतुर्वेदभाष्यकार प० जयदेव विद्यालकार, निरुक्त पर अत्यन्त विद्वतापूर्ण भाष्य के लेखक प० चन्द्रमणि विद्यालकार और वेदों के गम्भीर विद्वान् प० विश्वनाथ विद्यालकार ने गुरुकुल में ही शिक्षा प्राप्त की थी। वेदों के राजनैतिक सिद्धान्तों पर वृहत् ग्रथ की रचना करने वाले आचार्य प्रियव्रत जी वेदावाचस्पति, सामवेद के भाष्यकार प० रामनाथ जी वेदालकार, चारों वेदों के भाष्यकार प० हरिशरण सिद्धान्तालकार तथा वेदों का अग्रेजी भाषा में अनुवाद करने वाले प० सत्यकाम विद्यालकार तथा प० धर्मदत्त विद्यामार्तण्ड गुरुकुल कागडी के ही स्नातक रहे हैं। दर्शन शास्त्र और सस्कृत साहित्य के भी अनेक ऐसे विद्वान् गुरुकुल ने उत्पन्न किये जो काशी के प्रकाण्ड पडितों मे

विद्वता में कम नहीं हैं।

समग्र भारतीय इतिहास को नई दिशा देने वाले सुप्रसिद्ध इतिहासकार आचार्य रामदेव जी, डा० सत्यकेतु विद्यालकार तथा डा० हरिदत्त वेदालकार गुरुकुल कागडी की विभूतिया रही हैं।

कितने ही ऐसे गुरुकुल के स्नातक हैं जिन्होंने सीधे जर्मनी, इटली तथा फ्रांस में जाकर डाक्टरेट हासिल की। उनकी विद्वता को अन्य विश्वविद्यालयों ने भी स्वीकार किया। डा० प्राणनाथ विद्यालकार, डा० ईश्वर दत्त विद्यालकार, डा० सत्यकेतु विद्यालकार, डा० धर्मानन्द आयुर्वेदालकार, डा० बलराम आयुर्वेदालकार, डा० नारायण दत्त आयुर्वेदालकार, डा० सुरेश चन्द्र विद्यालकार आदि कितने ही स्नातकों ने यूरोप में जाकर डाक्टरेट प्राप्त की।

दक्षिण अफ्रीका में पं० नरदेव वेदालंकार ने, पू० अफ्रीका में प० सत्यपाल विद्यालंकार, प० सत्यदेव वेदालंकार, पं० मदनमोहन विद्यासागर और दिलीप वेदालंकार ने फीजी में, पं० अमीर चन्द विद्यालंकार ने और सुरीनाम आदि में श्री श्यामसुन्दर स्नातक ने अपनी विद्वता की धाक जमाई।

गुरुकुल के वर्तमान स्नातक

वर्तमान पीढी के गुरुकुल के स्नातकों ने भी समाज जीवन में अपनी व्यापक छवि छोड़ी है तथा ज्ञान विज्ञान की विविध शाखाओं में अपनी प्रतिभा से उच्चतम् पदों पर सुशोभित हुए हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित गुरुकुल के स्नातक तपेन्द्र कुमार ने अपनी उच्च प्रशासनिक क्षमता का परिचय दिया है। गुरुकुल के ही एक छात्र आनन्द कुमार अखिल भारतीय पुलिस सेवा हेतु चुने गये, एक अन्य छात्र नरेन्द्र जोशी भी भारतीय प्रशासनिक सेवा में चुने गये हैं। डा० सूर्य प्रकाश विद्यालकार, शम्भूदयाल कालेज में हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं तथा महेश विद्यालकार, रीडर देहली विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं। डा० वेदव्रत, आर्य कालेज, लुधियाना में हिन्दी विभागाध्यक्ष पद पर सुशोभित हैं। डा० विनोद चन्द्र विद्यालंकार, पंतनगर विश्वविद्यालय के अनुवाद एवं प्रबंध निदेशालय में सहायक निदेशक पद पर कार्यरत हैं। सस्कृत विभाग में श्री धर्मवीर, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय अजमेर, श्री वत्स विद्यालकार सम्बलपुर विश्वविद्यालय, सम्बलपुर, देवशर्मा, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय अजमेर में रीडर, श्री वीरेन्द्र, पजाब विश्वविद्यालय चडीगढ़ के सस्कृत विभाग में रीडर तथा रघुवीर वेदालंकार, देहली विश्वविद्यालय में रीडर पद पर सुशोभित हैं। अग्रेजी विभाग के छात्र आर०पी०अग्रवाल गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर में अंग्रेजी विभाग में रीडर पद पर सुशोभित हैं। गुरुकुल की स्नातिका सरोज दीक्षा विद्यालंकार दिल्ली समाज कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष पद पर आसीन हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग के डा० योगानन्द, भगतसिंह कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय में रीडर एवं विभागाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। इसी विभाग के धर्मवीर पुस्तकालय विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर श्रीराम कालेज ऑफ कामर्स देहली विश्वविद्यालय में पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

गुरुकुल आज प्राच्य विद्याओं की शिक्षा के साथ आधुनिक विषयों के शिक्षण का भी अभिनव केन्द्र बन गया है। विदेशां से अनेक छात्र गुरुकुल में अध्ययन एव शोध के लिये आते रहते हैं तथा यहा से वैदिक एव सस्कृत साहित्य की शिक्षा प्राप्त कर के वे वैदिक संस्कृति के प्रचार में जुट रहे हैं।

वेद विभाग से शोध उपाधि प्राप्त छात्र सतीश आज हालैण्ड में वेद प्रचार के कार्य में नियोजित हैं। इंडोनेशिया से आये छात्र इ. मादेतिर्वलव यहां से शिक्षा प्राप्त कर वहां एम.पी. के रूप में अपनी छाप छोड़ रहे हैं। वेद विभाग से शोध उपाधि प्राप्त जे.ई. लेबनिन, आज अमरीका के साउथ वेस्ट मिसेरी वि०वि० की धर्म दर्शन विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं। इसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका से आये वेद विभाग के छात्र राधेश यहां से पढ़कर वेद प्रचार कार्य में सलग्न हैं

गुरुकुल के विज्ञान स्नातक डा० विधुशेखर पालीवाल चिकित्सा विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.डी.) प्राप्त करके विश्व प्रसिद्ध एस्कार्ट हृदयरोग चिकित्सा सस्थान में हृदयरोग चिकित्सा संस्थान में हृदयरोग विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर रहे हैं। जहां से उन्हें अमेरिका हृदय चिकित्सा में विशिष्ट प्रशिक्षण हेतु भेजा गया है। गुरुकुल के विज्ञान स्नातक डा० अजय शंकर इस समय रेनबैक्सी में प्रबधक पद पर आसीन हैं। विज्ञान स्नातक डा० अनिल कुमार पूनिया को हाल ही में इण्डियन माइक्रोबायोलाजी एसोसियेशन द्वारा उनके शोध कार्यों पर पुरस्कार दिया गया। माइक्रोबायोलोजी के छात्र डा० नंदकिशोर बहुराष्ट्रीय कम्पनी के चेन्नई संस्थान में वैज्ञानिक के रूप में ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। इसी विभाग के अन्य छात्र सिद्धार्थ कपूर अमेरिका में बहुराष्ट्रीय फार्मास्यूटिकल कम्पनी में कार्यरत हैं। विज्ञान संकाय के ही एक छात्र दीपांकर भगत अमेरिका में विशेष अध्ययन छात्रवृत्ति हेतु चुने गये हैं। विज्ञान महाविद्यालय के अन्य छात्र दिनेश बिश्नोई भारत सरकार के इलैक्ट्रोनिक्स विभाग में कम्प्यूटर क्षेत्र में वैज्ञानिक के रूप में नियुक्त हैं। आज विज्ञान महाविद्यालय के अनेक छात्र रेनबैक्सी, सिप्ला, लुपिन, यूनिकैम, डाबर, मैक्स, मोहनमिकिन्स आदि उच्च कोटि की कम्पनियों में भिन्न-भिन्न पदों पर कार्यरत हैं।

हाल ही के वर्षों में विश्वविद्यालयों के अनेक छात्रों ने यू.जी.सी. द्वारा आयोजित अखिल भारतीय शोध अध्येता/व्याख्याता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की है, जिसमें प्राचीन भारतीय इतिहास में देवेन्द्र कुमार, विज्ञान सकाय के जयशकर आर्य, योग विभाग के सुरक्षित गोस्वामी उल्लेखनीय हैं। मनोविज्ञान विभाग के कतिपय छात्रों ने भी इस प्रतियोगिता में सफलता अर्जित की है। मनोविज्ञान विभाग के मेधावी छात्र तन्मय भट्टाचार्य को इथोपिया सरकार ने इसी वर्ष अपने विश्वविद्यालय में प्राध्यापक पद पर नियुक्त किया है। माइक्रोबायलोजी के छात्र तरूण चुग को सऊदी अरब सरकार ने वैज्ञानिक के रूप में नियुक्त किया है।

गुरुकुल के आचार्य

गुरुकुल के आचार्यों में महात्मा मुंशी राम जी, आचार्य गगादत्त जी, आचार्य श्री काशीनाथ जी शास्त्री, आचार्य रामदेव, श्री जयचन्द्र विद्यालकार, आचार्य अभयदेव, डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, श्री इन्द्रजी, डा० सत्यकेतु विद्यालकार तथा डा० रामनाथ वेदालकार ने अध्यापन, स्वाधीनता आंदोलन, समाजसेवा तथा राष्ट्रीय साहित्य लेखन के क्षेत्रों में अभूतपूर्व यश अर्जित किया। सर्वशास्त्र निष्णात पण्डित काशीनाथ शास्त्री तथा पण्डित शिवशकर काव्यतीर्थ की धाक पूरे सस्कृत ससार में थी। आचार्य पद्मसिंह शर्मा का लोहा हिन्दी संसार मान चुका था। श्री जयचन्द्र, डॉ० सत्यकेतु तथा पण्डित हरिदत्त वेदालकार के वैदुष्य को इतिहासवेत्ताओं ने सादर स्वीकार किया। गुरुकुल ही भारत की ऐसी प्रथम शिक्षण-सस्था है जहा पराधीन भारत में विज्ञान के विषयों पर हिन्दी में

पुस्तकें तैयार हुई। इनमे आचार्य गोवर्धन शास्त्री की भौतिकी तथा रसायन, श्री महेशचरण सिन्हा की वनस्पति शास्त्र तथा हिन्दी कैमिस्ट्री और श्री विनायक साठे की विकासवाद पुस्तके प्रसिद्ध हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दी, उर्दू तथा अग्रेजी मे सद्धर्म प्रचारक, श्रद्धा तथा लिबरेटर जैसे पत्र निकालकर पत्रकारिता की नींव लगाई। उनसे प्रेरणा लेकर श्री इन्द्र वाचस्पति, श्री सत्यदेव विद्यालकार, श्री सत्यकाम विद्यालकार, श्री चन्द्र गुप्त विद्यालकार तथा श्री क्षितीश विद्यालकार ने हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्रो मे अपूर्व यश अर्जित किया।

पुस्तकालय

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय पुस्तकालय उत्तराखण्ड की एक निधि है। पुराविद्याओं में प्राचीन साहित्य, धर्म, दर्शन तथा सस्कृति की यहा दुर्लभ पुस्तकें तथा पाण्डुलिपिया सरक्षित है। इस पुस्तकालय में सस्कृत साहित्य, वैदिक साहित्य, दर्शन समाज, विज्ञान एव विज्ञान से सम्बन्द्ध १,३०,००० पुस्तकों का सकलन है। यह पुस्तकालय देश का एक मात्र ऐसा पुस्तकालय है जहा आर्य समाज की पुस्तकों का सग्रह पृथक वीथिका के रूप में स्थापित है। शोधार्थियों तथा प्राध्यापकों को गहन अध्ययन की सुविधा दिये जाने हेतु स्टडी कैरल्स उपलब्ध कराये गये हैं। गत वर्षो मे पुस्तकालय के सग्रह में असाधारण वृद्धि हुई है। १९९३-९४ में पुस्तकालय का जहा सग्रह १,१३,००० था वहा १९९७-९८ में १,१३,००० हो गया है। पुस्तकालय का उपयोग करने वाले सदस्यों की सख्या १९९७-९८ में १२०५ रही। पुस्तकालय के विशाल सग्रह का विश्वविद्यालय के सभी पाठक भरपूर लाभ उठाते हैं। लगभग २२,००० किताबें प्रतिवर्ष विभिन्न श्रेणी के पाठक पुस्तकालय से अध्ययन हेतु इश्यू कराते हैं। विज्ञान के शोधार्थियों की जानकारी के लिये २०० राष्ट्रीय तथा अतर्राष्ट्रीय पत्रिकायें मंगाई जाती है। पुस्तकालय का एक विशाल सदर्भ प्रकोष्ठ भी है, जिसमे २०,००० संदर्भ ग्रन्थ समाहित है। ८००० से अधिक सजिल्द पत्रिकायें सन्दर्भ पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। यदि किसी शोध छात्र को उसके विषय से सबधित पुस्तक नहीं मिलती है तो इन्टर-लाइब्रेरी लोन पर पुस्तकें मगाने की सुविधा इस पुस्तकालय में उपलब्ध है। पुस्तकालय में १८वीं एवं १९वीं शताब्दी का एक दुर्लभ पुस्तक संग्रह भी बना हुआ है। इसके अतिरिक्त गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के पुराने स्नातकों द्वारा जो पुस्तकें भेंट स्वरूप प्राप्त होती है उनके लिये भी इस पुस्तकलय में पृथक प्रकोष्ठ निर्मित है। पुस्तकालय का आयुर्वेद संग्रह, पाण्डुलिपि सग्रह, दुर्लभ पुस्तक सग्रह, आरक्षित पुस्तक संग्रह, आर्य सग्रह आदि विशिष्टताओं को लिए ज्ञान की संचित सम्पदा को आरक्षित कर रहे हैं। पुस्तकालय के सग्रह को कम्प्यूटरीकृत डेटावेस बनाने का कार्य भी तीव्र गति से चल रहा है तथा आशा की जाती है, कि निकट भविष्य में पुस्तकालय के पुस्तक रिकार्ड कम्प्यूटर की स्क्रीन में आ जायेगा। इस श्रृंखला में पुस्तकालय में उपलब्ध सभी शोध प्रबधों का कम्प्यूटर डेटाबैंक बना दिया गया है। पुस्तकालय के सग्रह को शोध अध्येताओं तथा प्रबुद्ध पाठकों तक पहुँचाने हेतु अनेक विषय तथा वाङ्मय सूचियों का निर्माण किया गया है। पुस्तकालय के कम्प्यूटर को इन्टरनेट से जोड़ा जा रहा है। शोध छात्रों के उपयोग हेतु पुस्तकालय की कम्प्यूटर सेवा का विस्तार तेजी से किया जा रहा है।

पुस्तकालय में १५० छात्रों के बैठकर अध्ययन करने की व्यवस्था है।

विश्वविद्यालय के उपयोग हेतु विभिन्न विभागों में विभागीय पुस्तकालय की स्थापना की गई है जिसके अन्तर्गत कम्प्यूटर, जन्तुविज्ञान, भौतिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, गणित, माइक्रोबायोलोजी, पर्यावरण रसायन विज्ञान, मनोविज्ञान, अंग्रेजी, विभागों में एवं कन्या महाविद्यालय में विभागीय पुस्तकालय स्थापित है। विश्वविद्यालय पुस्तकालय में प्रतियोगिता परीक्षा में तैयारी हेतु प्रतियोगी पुस्तकों का पृथक् प्रकोष्ठ बना हुआ है। यह पुस्तकालय देश का ऐसा प्रथम पुस्तकालय है जिसमें निर्धन छात्रों को उनकी पढाई के खर्च हेतु आंशिक रोजगार दिया जाता है। जिसमें शिक्षा के साथ-साथ छात्रों को रोजगार देकर उनकी शिक्षा को सही दिशा प्रदान की जाती है।

आज गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय में उपलब्ध सभी वैदिक एवं साहित्य की पुस्तकों की वृहद् सूची पुस्तकाकार रूप में उपलब्ध है। इसी प्रकार पुस्तकालय में उपलब्ध अंग्रेजी साहित्य की पुस्तकें, स्नातक संग्रह की पुस्तकें तथा शोध प्रबधों का सपूर्ण संग्रह पुस्तकाकार रूप में पाठकों को संदर्भ हेतु उपलब्ध है। इसी प्रकार पुस्तकालय में शोध पत्रिकाओं की कम्प्यूटरीकृत सूची भी विषयानुसार छात्रों को सन्दर्भ हेतु उपलब्ध है।

पुरातत्व संग्रहालय

स्थापना और विकास :

स्वामी श्रद्धानन्द की प्रेरणा से इस संग्रहालय की स्थापना सन् १६०७-८ में गंगापार पुण्य भूमि पर हुई। सग्रहालय की स्थापना के पीछे उस समय मूल भावना यह थी कि यह विद्यार्थियों के अध्ययन में सहायक हो तथा साधारण जनता में भी विभिन्न विषयों के प्रति रुचि उत्पन्न हो। अत १६४५ ई० में सग्रहालय का पुनर्गठन किया गया तथा ऐतिहासिक वस्तुओं के सग्रह पर विशेष वल दिया गया। मार्च १६५० ई० में गुरुकुल की स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर वेद मन्दिर में वर्तमान सग्रहालय के उज्जवल भविष्य की कामना की।

सन् १६७२ में सग्रहालय को विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एव पुरातत्व विभाग के अधीन कर दिया गया। सन् १६८१ ई० में सग्रहालय अपने वर्तमान नवीन भवन में स्थानान्तरित कर दिया गया तथा विधिवत् विश्वविद्यालय का अग वन गया।

आद्य ऐतिहासिक संस्कृति कक्ष :

इसमें मोहनजोदड़ो हड़प्पा, एव कालीबगा से सग्रहित वस्तुए प्रदर्शित की गई हैं। आद्य ऐतिहासिक काल से ताबे के हथियार, मगलौर तहसील जिला सहारनपुर के निकट नसीरपुर नामक गाव में डा० देशपाण्डे को उत्खनन द्वारा प्राप्त हुए थे। इसमें काटेदार वर्छी, हार्पून्स, कुल्हाडी आदि नौ हथियार हैं। हथियार सभवत १८वीं शती ई०पू० के हैं। सिन्धुघाटी सभ्यता से सम्बन्धित सामग्री में मिट्टी की मूर्तियॉ, मृत्तिका पात्र, खिलौने आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मिट्टी की मूर्ति में मातृदेवी की मूर्तिया अपना एक विशेष स्थान रखती हैं।

तक्षण कृतियां :

इस सग्रहालय की तक्षण-दीर्घा में करीब ३५० प्रस्तर एव धातु प्रतिमाए सग्रहीत हैं। इनमें प्रमुख रूप से कुषाण काल से लेकर मध्यकाल तक की हिन्दू बौद्ध तथा जैन मूर्तिया हैं। ये मूर्तिया अधिकतर हरिद्वार के आस-पास के क्षेत्रों से सग्रहीत की गई हैं। गुप्तकालीन मूर्तियों में बुद्ध का सिर, शेषशायी विष्णु तथा

महिषासुर-मर्दिनी की प्रतिमा उच्चस्तरीय है। पाषाण प्रतिमाओं के अतिरिक्त ११५ धातु प्रतिमाएं भी संग्रहालय मे संग्रहीत हैं।

मृण्मूर्तियां :

भारतीय इतिहास के निर्माण में मृण्मूर्तियों का विशेष योगदान रहा है। इस संग्रहालय में ३६३ मृण्मूर्तियां संग्रहीत हैं जो मौर्यकाल से लेकर गुप्तकाल तक की हैं। इनका संग्रह प्रमुख रूप से मथुरा, कौशाम्बी तथा समीपवर्ती स्थानों से किया गया है।

मृतिका पात्र :

इस संग्रहालय में विभिन्न प्रकार के मृतिका पात्र भी संग्रहीत हैं। मृतिका पात्र विभिन्न स्थानों जैसे मोहनजोदडों, हडप्पा, कालीबगा, कुनदनपुर (सहारनपुर) मडावर (बिजनौर) नसीरनपुर (सहारनपुर), राखीगढ (हिसार), मित्ताथल (भिवानी) आदि स्थानों से संग्रहीत किये गये हैं।

मुद्रा कक्ष :

प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में सिक्कों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इनसे तत्कालीन राजनैनिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक दशा का अच्छा परिचय प्राप्त होता है। आरम्भिक आहत सिक्कों से लेकर अर्वाचीन काल तक के सिक्के प्रदर्शित किये गये हैं।

पाण्डुलिपि कक्ष :

संग्रहालय में हस्तलिखित ग्रन्थों का भी संग्रह है। इनमें सभी धर्मों को प्रतिपादित करने वाले हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह का प्रयास किया है। हिन्दू धर्म के पवित्र ग्रन्थों में वाल्मिकी कृत रामायण, महाभारत के कई प्रकार के संस्करण, काश्मीरी (शारदा) लिपि मे लिखित प्रार्थना पुस्तक, बंगला भाषा में लिखित देवीस्तोत्र, १६वी शती के लगभग तिब्बती भाषा में लिखित तत्र ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं।

अस्त्र-शस्त्र कक्ष :

इस संग्रहालय मे अस्त्र-शस्त्र का भी एक पृथक से कक्ष है। इनमें धनुषबाण, तलवार, ढाल तथा कवच प्रमुख हैं। युद्ध में बजने वाली तुरही उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त द्वितीय महायुद्ध के समय की कुछ बन्दूकें, मशीनगन आदि भी प्रदर्शित की गई हैं।

श्रद्धानन्द बलिदान कक्ष :

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के संस्थापक स्वर्गीय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति में यह कक्ष स्थापित किया गया है। यह कक्ष आर्य समाज की एक बहुत बड़ी धरोहर है। इस प्रदर्शनी में पहुच कर दर्शक आत्मविभोर हो उठते हैं। इसमें स्वामी जी के आरम्भिक जीवन-काल से अन्तिम समय तक की झांकी प्रस्तुत की गई है।

हिमालय दर्शन चित्रवीथिका संग्रह :

हिमालय पर्वत श्रृखला भारतीय, मनीषियों, तपस्वियों तथा योगियों की कर्मभूमि के रूप में सर्वविदित है। संग्रहालय में हिमालय पर्वत की उपत्यकाओं, शिखरों एव मनोरम के कुछ रगीन फ़ोटोग्राफ्स प्रदर्शित किये गये हैं।

विविध सामग्री कक्ष :

इस कक्ष में प्रदर्शित वस्तुओ मे लाख कला के नमूने, नाथद्वारा तथा कागडा शैली के चित्र, पडित नेहरू को उपहार में प्राप्त कुछ विदेशी खिलौने, उत्तराखण्ड के प्राकृतिक सौन्दर्य के चित्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र

गुरुकुल के गौरवशाली प्रकाशनों के पुन प्रकाशन को बढाने के कार्य में यह केन्द्र सलग्न है। पिछले कुछ वर्षों में प्रकाशन केन्द्र ने वैदिक साहित्य, दर्शन, भारतीय इतिहास, पुरातत्व तथा आर्यसमाज से सबंधित साहित्य के प्रकाशन का बीडा उठाया है। इसके अतिरिक्त इस प्रकाशन केन्द्र के द्वारा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के उन ग्रन्थों का भी प्रकाशन किया जा रहा है जिनका मूलाधार वैदिक सस्कृति है।

इस केन्द्र के मानद निदेशक डॉ० विष्णुदत्त राकेश, आचार्य हिन्दी विभाग एव पूर्व संकाय-अधिष्ठाता मानविकी तथा व्यवसाय प्रवन्धक के रूप में डॉ० जगदीश विद्यालंकार, पुस्तकालयाध्यक्ष कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय मे श्रद्धानन्द वैदिक शोध सस्थान की स्थापना कुछ वर्ष पूर्व की गई थी जिसके निदेशक के रूप में डॉ० भारत भूषण विद्यालकार कार्यरत हैं। गुरुकुल पत्रिका का प्रकाशन इस सस्थान द्वारा किया जाता है।

श्रद्धानन्द अनुसंधान प्रकाशन केन्द्र द्वारा निम्नांकित ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया है

१.	स्वामी श्रद्धानन्द	- प० सत्यदेव विद्यालकार	५०० ००
२	वेद का राष्ट्रीय गीत	- वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति	२०० ००
३.	श्रुतिपर्णा	- डा० विष्णुदत्त राकेश	६५ ००
४	वैदिक साहित्य, सस्कृति और समाज दर्शन	- डा० विष्णुदत्त राकेश	५००.००
५	वेद और उसकी वैज्ञानिकता भारतीय मनीषा के परिप्रेक्ष्य में	- आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति	३०० ००
६	शोधसारावली	- सम्पादित	२२० ००
७	भारत वर्ष का इतिहास प्रथम एव द्वितीय खण्ड	- आचार्य रामदेव	
८	क्लासिकल राईटिंग ऑन वैदिक एव सस्कृत लिट्रेचर	- डॉ० सूर्यकान्त श्रीवास्तव - डॉ० जगदीश विद्यालकार	८०० ००
९	ग्लिम्पस आफ एनवायरमेन्टल परसेप्ट्स	- डा० वी०डी० जोशी	५० ००
१०.	स्वामी श्रद्धानन्द (समग्र मूल्याकन)	- डा० रणजीत सिह	३००.००
११	प० इन्द्र विद्यावाचस्पति कृतित्व के आयाम	- डा० कुशलदेव शंकरदेव कापसे (सम्पादन डा० भारत भूषण)	
१२	दीक्षालोक	- डा० विष्णु दत्त राकेश - डा० जगदीश विद्यालकार	५०० ००
१३	स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पादकीय लेख	- डा० विष्णु दत्त राकेश - डा० जगदीश विद्यालकार	५०० ००

गत वर्ष गुरुकुल मे समय-समय पर महापुरुषों द्वारा प्रदत्त दीक्षान्त भाषणों तथा सारस्वत व्याख्यानो का सग्रह 'दीक्षालोक' के नाम से प्रकाशित हुआ है। इन व्याख्यानो से राष्ट्रीय शिक्षा, गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली, भारतीय सस्कृति, वैदिक धर्म, दर्शन, साहित्य कला तथा राजनैतिक चेतना और परिदृश्य पर पाठको को

विचारोत्तेजक सामग्री प्राप्त होगी। इस ग्रन्थ से आज के विद्यार्थी को यह ज्ञात होगा कि गुरुकुल क्या था और क्या है ? दीक्षालोक में ऐसी सामग्री प्रकाशित की गई है जिसमें गुरुकुल के सौ वर्षों का इतिहास उभरकर सामने आता है। नई पीढी के छात्रों को इस प्रकाशन से अपना लक्ष्य ढूंढने में प्रेरणा मिलेगी। इसी क्रम में इस वर्ष अप्रैल १९९८ में इस प्रकाशन केन्द्र द्वारा एक अन्य ग्रन्थ स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पादकीय लेख नामक ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है। आर्य समाज के प्रखर नेता तथा गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के सस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी उर्दू, हिन्दी तथा अग्रेजी पत्रकारिता के राष्ट्रीयतावादी पुरोधा थे। उन्होंने १८८९ ई० से सन् १९२६ ई० तक सद्धर्म प्रचारक, श्रद्धा तथा लिबरेटर में सहस्त्राधिक लेख तथा टिप्पणियां लिखी। उस युग का इतिहास इस सामग्री के अध्ययन अनुशीलन के बिना नहीं लिखा जा सकता। प्रस्तुत संकलन स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पादकीय लेख इस दृष्टि से एक अभाव की पूर्ति करता है। यह एक ऐतिहासिक महत्व का दस्तावेज है।

वेदामृत

(चुने हुए भजनों के ओडियो कैसेट)

वेद और आर्य समाज की मूल भावना को ध्यान में रखकर लिखे गये कुछ चुनींदा भजनों का 'वेदामृत' नाम से एक ऑडियो कैसेट गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के वेद विभाग के तत्वाधान में तैयार कराया गया है। डा० विष्णुदत्त राकेश के वैदिक गीतों के अलावा "फहराये विश्वभर में ये ओम् ध्वज हमारा" तथा "पूजनीय प्रभु हमारे भाव उज्जवल कीजिये" जैसे बहुचर्चित पारम्परिक गीतों को भी इस कैसेट में नवीन साज स्वर दिये हैं। इन श्रद्धा समर्पण के गीतों को स्वर दिया है डा० अम्बुज शर्मा ने तथा संगीतवद्ध किया है देश के जाने माने सगीतकार विशाल भारद्वाज ने।

गुरुकुल की शोध पत्रिकायें

१.	गुरुकुल पत्रिका	- प्राच्य विद्याओं से सम्बद्ध शोध सामग्री का प्रकाशन **मासिक।**
२	वैदिक ग्रन्थ	- प्राच्य विद्या, मानविकी एवं समाज विगमन सबधित शोध पत्रों का अग्रेजी माध्यम से प्रकाशन। **अर्द्धवार्षिक।**
३.	हिमालयन जर्नल ऑफ- इनवायरनमेंट एण्ड जुलोजी	विश्वविद्यालय के जन्तु विज्ञान एवं पर्यावरण विभाग से निकलने वाली इस अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका में पर्यावरण जन्तु विज्ञान एव वनस्पति विज्ञान से सम्बन्धित शोध लेखों का समावेश किया जाता है। **अर्द्धवार्षिक ।**
४.	प्राकृतिक एव भौतिकीय- शोध पत्रिका	विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय से निकलने वाली अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका में विज्ञान से संबंधित शोध पत्रों का प्रकाशन किया जाता है। **अर्द्धवार्षिक ।**
५	आर्य भट्ट	- प्राच्य विद्याओं एवं विज्ञान को जोडने वाली हिन्दी में निकलने वाली शोध पत्रिका **वार्षिक।**

सेमिनार, राष्ट्रीय संगोष्ठियां, परिचर्चा, सम्मेलन आदि

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के सकायों के विद्यार्थियों, शोध-छात्रों तथा विषय विशेषण में रुचि रखने वाले जिज्ञासुओं के मार्गदर्शन हेतु विश्वविद्यालय मे गत ५ वर्षों में परिचर्चा, कार्यशालाओं, सम्मेलनों का अवाध प्रवाह जारी रहा। विगत ५ वर्षों में निम्नांकित राष्ट्रीय संगोष्ठियों, परिचर्चाओं आदि का आयोजन हुआ।

१ राष्ट्रीय सगोष्ठी "शिक्षा पद्धति में पर्यावरण एव मूल्यों का महत्व" (१६-२-६४ - २१-२-६४)

२. राष्ट्रीय सेमिनार - इन्डियन ऐसोसियेशन फार कनेडियन स्टडीज के सहयोग से "थ्योरीज एण्ड मूवमेंट्स इन लिटरेचर", "कनाडा एण्ड इण्डिया" (१६६३-६४)

३. राष्ट्रीय वैदिक संगोष्ठी "वर्ण व्यवस्था का वैज्ञानिक आधार" (२४-३-६५ - २६-३-६५)

४. राष्ट्रीय सेमिनार "इकोलोजिकर पर्सपेक्टिव एण्ड विहेवियर" मनोविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित (२४-११-६४ - २६-११-६४)

५. इण्डियन फिलोसोफिकल कांग्रेस (१३-१०-६५ १५-१०-६५)

६. केन्द्रीय क्षेत्रीय सम्मेलन, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सघ "आगामी शताब्दी में उत्तर साक्षरता" (१६-१२-६५ - १७-१२-६५)

७. राष्ट्रीय सगोष्ठी "वैदिक ज्योमेट्री" (३१-८-६५)

८. राष्ट्रीय सगोष्ठी "इण्डियन अकेडमी ऑफ इन्वायरमेंटल साइसेज" के सहयोग से आयोजित "पर्यावरण परिवर्तन का जैविक विविधता पर प्रभाव" (अक्टूबर, ६५)

६. राष्ट्रीय सेमिनार "व्याप्ति तद् ग्रहोपायाश्च" भारतीय दार्शनिक अनुसधान परिषद, नई दिल्ली के सौजन्य से (फरवरी - १६६७)

१०. इण्डियन सोसाइटी फार कम्यूनिटि एजुकेशन के सहयोग से ७वा राष्ट्रीय सम्मेलन (१८-११-६६ - २०-१२-६६)

११. राष्ट्रीय सगोष्ठी "विश्वविद्यालयों के निजीकरण होने पर विश्वविद्यालयों के प्रशासकों की परिवर्तित परिवेश में भूमिका" (२२-११-६६ - २२-११-६६)

१२. राष्ट्रीय वानस्पतिक सगोष्ठी "जैव प्रोद्योगिकी नये आयाम एव दिशायें" (१६६६)

१३. राष्ट्रीय कार्यशाला - वैज्ञानिकता तथा तकनीकी शब्दावली आयोग कम्प्यूटर की हिन्दी तकनीकी शब्दावली का विकास एव अनुप्रयोग (६-१-६७ - १०-१-६७)

१४ १६वा अखिल भारतीय वानस्पतिक सम्मेलन (दिसम्बर २६-२८, १६६८)

१५. ४७वा अखिल भारतीय प्रौढ शिक्षा सम्मेलन (२७-११-६७ - ३०-११-६७)

१६ राष्ट्रीय पर्यावरण शोध सगोष्ठी, (फरवरी १६६८)

१७ इन्डस्ट्री फैकल्टी-मीट (इनफाम ६७) १३-१२-६७

१८ सत कबीर की ६०० वी जयती के अवसर पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय परिचर्चा (मई १६६८)

विशिष्ट व्याख्यानों की अबाध श्रृंखला

विश्वविद्यालयों के विभिन्न संकायों में अध्ययनरत छात्र तथा शोध अध्येताओं के ज्ञान-विज्ञान को विस्तृत आयाम देने हेतु विश्वविद्यालय में लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों का व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया जाता रहा है। इस कड़ी में प्रमुख हैं।

गुरुकुल में आने वाले विदेशी विद्वान :

१. चैक गणराज्य के भारत में राजदूत तथा हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री ओदोलेन स्मेकल।
२. डा० ओलेग जी उल्तिसफेरोव, रूसी अध्ययन भाषा संस्थान, मास्को।
३. डा० एम०जी० वासन - कनाडा के प्रसिद्ध उपन्यासकार।
४. डा० टी०आर० कोले - कनाडा।
५. डा० होर्स्ट राशेल बाकर, मिनीसोटा, अमेरिका।
६. डा० कॉप, जर्मनी।
७. प्रो० वाई निशिमुरा, जापान।
८. प्रो० कानिंग, जर्मनी।
९. प्रो० हॉक, जर्मनी।
१०. प्रो० एल०बेला, हंगरी।

राष्ट्रीय विद्वान् :

१ डा० त्रिभुवन सिंह, पूर्व कुलपति, काशी विद्यापीठ।
२ डा० गंगा प्रसाद विमल, निदेशक केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय।
३ डा० महेन्द्र कुमार, प्रो० तथा अध्यक्ष हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।
४ डा० कृष्ण मुरारी मिश्रा, प्रो० तथा अध्यक्ष हिन्दी विभाग, अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय।
५ डा० शिवशेखर मिश्र, प्रो० तथा अध्यक्ष संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय।
६. डा० आर०पी० दुबे, राँची विश्वविद्यालय।
७. ब्रिगेडियर ओ०पी० चौधरी, कुलपति महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय।
८. प्रो० जी०वी० सिंह, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय।
९. डा० जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल - वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन।
१०. डा० नित्यानन्द शर्मा, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय।
११. एम०के०मित्तल, प्रबंध निदेशक, भेल, हरिद्वार।
१२. ब्रिगेडियर के०एस० वर्मा, ओ०सी० रायवाला।
१३. डा० रामकृष्ण शर्मा, शिक्षा सलाहकार, भारत सरकार।
१४. डा० ओमप्रकाश पाण्डेय, लखनऊ विश्वविद्यालय।
१५. डा० अभेदानन्द भट्टाचार्य, भगवान दास संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार।
१६. प्रो० जी०एस० पाण्डेय, अध्यक्ष गणित अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन।
१७. प्रो० वी०पी० सक्सेना, अध्यक्ष गणित विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय।
१८. डा० सुशान्त चौधरी, वाइल्ड लाइफ इन्स्टीट्यूट, देहरादून।
१९. प्रो० आर०एन० सक्सेना,. दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

२०. प्रो० रविप्रकाश, अवध विश्वविद्यालय।

२१. डा० जी०एस० पाण्डेय, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़।

२२. डा० वाई०आर०मल्होत्रा, कुलपति जम्मू विश्वविद्यालय।

२३. डा० सुधीर केकर, डायरेक्टर कम्प्यूटर केन्द्र, जे०एन०यू०, नई दिल्ली।

२४. प्रो० एस०के०जोशी, पूर्व डायरेक्टर जनरल, सी०एस०आई०आर० देहली।

२५. प्रो० एन०जी० मलकानिया, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ फारेस्ट मैनेजमेन्ट, भोपाल।

२६. प्रो० आशा सकलानी, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर।

२७. प्रो० वी०के० झॉं, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ रिमोट सेन्सिग, देहरादून।

२८. डा० अमित राय, डब्लू०डब्लू०एफ०, देहली।

२९. डा० ए०पी० गर्ग, मेरठ विश्वविद्यालय।

३०. प्रो० लक्ष्मीनरसिंह गम, तंजौर।

३१. डा० एस०ही० तिवारी, कुमायू विश्वविद्यालय, नैनीताल।

३२. प्रो० वी०पी० सिंह, रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।

३३. प्रो० बी०एन० जौहरी, पंतनगर विश्वविद्यालय, पतनगर।

३४. प्रो० आर०आर० दास उपकुलपति, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर।

३५. डा० भवानी लाल भारतीय, पूर्व अध्यक्ष दयानन्द पीठ, चंडीगढ़।

उपर्युक्त शिक्षा शास्त्री एव विद्वानों ने गुरुकुल के विभिन्न क्रियाकलापों का अवलोकन किया और शिक्षकों एवं छात्रों का उचित मार्गदर्शन प्रदान किया। गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय में नवम पंचवर्षीय योजना के अतर्गत अनुदान दिये जाने हेतु अनुदान टीम आई। उक्त टीम ने विश्वविद्यालय के सभी सकायों का निरीक्षण किया और उन्होंने आशा प्रकट की कि विश्वविद्यालय में जहा प्राच्य विषयों की शिक्षा का प्रवन्ध है वहां कम्प्यूटर, सूक्ष्म जीव विज्ञान एव प्रबन्ध जैसे आधुनिक पाठ्यक्रमों की भी उच्चतर शिक्षा की व्यवस्था होगी।

कन्याओं के लिये शिक्षण सुविधाओं के विस्तार पर बल दिया गया है तथा आशा की जाती है कि यू०जी०सी० की इस अनुदान समिति द्वारा नवीं पचवर्षीय योजना में गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय को अनेक योजनाओं की स्वीकृति प्राप्त होगी तथा गुरुकुल के उद्देश्यों को पूरा करने वाले मूलभूत उद्देश्यों को इस अनुदान से प्राप्त होने में सहयोग मिलेगा। आज गुरुकुल आधुनिक शिक्षा के रूप को मूल्य आधारित शिक्षा देने हेतु पूर्णत: कटिबद्ध है।

गुरुकुल शिक्षकों की विदेश यात्रायें :

ज्ञान की दीप शिखा परस्पर आदान प्रदान एव वैचारिक विनिमय से ही प्रज्जवलित रहती है। गत कुछ वर्षों में गुरुकुल के निम्नांकित शिक्षकों ने विदेश यात्रायें कीं। इन शिक्षकों ने वहा आयोजित सेमीनार, कार्यशालाओं आदि में भाग लिया। अनेक शिक्षकों ने वहा के संस्थानों में व्याख्यान दिये।

१. डा० ए०के० इन्द्रायन - रीडर, रसायन विभाग।

१९८१ - रोटरी इन्टरनेशनल द्वारा कनाडा, अमेरिका तथा ग्रेट ब्रिटेन की यात्रा हेतु चुने गये।

१९८८ - कनाडा में शोध पत्र हेतु आमत्रित।

१९९३ - जापान एव थाईलैण्ड की यात्रायें।

२. डा० श्रवणकुमार - वरिष्ठ प्रवक्ता, अग्रेजी विभाग।

१६६५ - एक माह हेतु फेकल्टी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत शास्त्री इन्डो केनेडियन इंस्टीट्यूट के द्वारा कनाडा की यात्रा।

३ डा० वी०डी० जोशी - सकाय अधिष्ठता, जीव विज्ञान संकाय।

१६८८-८६ - फिनलैण्ड मे सेमीनार में भाग लिया। फ्रांस की यात्रा की, माइक्रो-बायलोजी के सेमीनार में भाग लिया।

१६६३ - इग्लैण्ड में कार्यशाला में भाग लिया।

४ दिनेश भट्ट - रीडर जतु विज्ञान एवं पर्यावरण विभाग।

१६८८-८६ - फिनलैण्ड में अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लिया।

५ पी०सी० जोशी - व्याख्याता, जन्तु विज्ञान एवं पर्यावरण विज्ञान।

१६६४ - ग्रेट-ब्रिटेन में ४ माह का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

६ डा० रणधीर सिंह, रीडर रसायन विभाग।

१६६४-६५ - केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लास एन्जील्स में २ वर्ष के लिये पोस्ट-डाक्टरल कार्यक्रम हेतु चुने गये तथा प्रोफेसर-थामस एच० फाइफ की प्रयोगशाला में कार्य अनुभव प्राप्त किया।

७ डा० कमलकात बुधकर - वरिष्ठ प्रवक्ता, हिन्दी विभाग

१६६७ - दो माह हेतु जर्मनी एव लदन की यात्रा, अनेक संस्थानों में व्याख्यान दिये।

८ डा० एस०एल० सिंह - अधिष्ठाता, विज्ञान संकाय, प्रोफेसर गणित विभाग।

१६६६-६७ - ब्रुनई विश्वविद्यालय, दारुसलाम में विजिटिंग प्रोफेसर (अगस्त १६६६ से मई १६६७), विगत वर्षों में प्रो० सिंह फ्रांस, यू०एस०ए०, स्लोवारिया, पोलैण्ड तथा कनाडा की यात्रायें कर चुके हैं।

६ डी०के० माहेश्वरी

१६६५ - अतिथि प्राध्यापक के रूप मे (जून-जुलाई १६६५) उल्म-विश्वविद्यालय जर्मनी में कार्य।

१६६५ - एक माह हेतु टोकियो विश्वविद्यालय प्रयोगशाला में कार्य अनुभव प्राप्त।

१६६८ - दो माह हेतु टोकिया साइन्स विद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य।

१०. कौशल कुमार

१६६४ - जुरेण्डो विश्वविद्यालय, टोकियो जापान में सेमीनार में भाग लिया।

उपर्युक्त शिक्षकों के अतिरिक्त डा० पुरुषोत्तम कौशिक, रीडर वनस्पति विभाग तथा डा० वीरेन्द्र अरोडा, रीडर गणित विभाग ने भी शैक्षणिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत विदेश यात्रायें कीं।

शिक्षा विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत इस समय शिक्षण कार्य निम्नांकित छह सकायों में विभाजित है -

१.	प्राच्यविद्या सकाय	२.	मानविकी सकाय
३.	विज्ञान सकाय	४.	जीवविज्ञान सकाय
५.	प्रबन्ध सकाय	६.	प्रौद्योगिकी संकाय

प्राच्य विद्या सकाय

विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्याओं के अंतर्गत निम्नांकित विषयों को शामिल किया गया है :

१. वेद विभाग
२. संस्कृत विभाग
३. दर्शन विभाग
४. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
५. योग विभाग

वेद विभाग

गुरुकुल की स्थापना का एक उद्देश्य वेद प्रचार करना रहा है, इसी भावना से वेद विभाग में शिक्षण कार्य सम्पन्न किया जाता है। गतवर्ष से विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले सभी छात्रों को वैदिक संस्कृति का परिचय देने के लिये धर्म, दर्शन, संस्कृति विषयों को समाविष्ट किया गया है। वेद विभाग के छात्रों को वैदिक कर्मकाण्ड में प्रयोगात्मक ज्ञान कराने हेतु "वैदिक संग्रहालय एवं प्रयोगशाला" की स्थापना की गई है। इसमे ब्राह्मण ग्रन्थ एव सूत्र ग्रंथो मे निर्दिष्ट सभी प्रकार के यज्ञीय पात्रों का सग्रह किया गया है। अनेक प्रकार के हवन कुण्ड, जड़ी-बूटिया तथा वैदिक पुस्तकों को सकलन किया गया है। पौर्णमास यज्ञ का वीडियो केसेट तथा षोडश संस्कारों का ज्ञान छात्रों को कराया जाता है। इसके अन्तर्गत वैदिक कर्मकाण्ड तथा पौरोहित्य के विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था है। वेदालकार में प्रवेशित चुने हुए छात्रों को प्रतिमाह ५०० रु० की छात्रवृति देने का प्रावधान है। एम०ए० वेद के छात्रों को भी विशेष छात्रावृत्तिया उपलब्ध कराई जाती है।

संस्कृत विभाग एवं दर्शन विभाग

गुरुकुल का संस्कृत तथा दर्शन विभाग अपनी स्थापना काल से अलग पहचान एवं छाप छोडने में सफल रहा है। संस्कृत विभाग को पल्लवित एव घोषित करने में डा० रामनाथ वेदालकार ने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। इसी प्रकार दर्शन विभाग श्री सुखदेव जी का ऋणी रहेगा। जिन्होंने अपने जीवन के लम्बे समय तक इस विभाग को पोषित किया। सम्प्रति संस्कृत विभाग मे प्रोफेसर पद पर आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री तथा दर्शन विभाग मे प्रोफेसर पद पर डा० जयदेव वेदालकार कार्यरत है।

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

राष्ट्रीय स्तर के सुप्रसिद्ध इतिहासकार डा० सत्यकेतु विद्यालकार, प्रो० हरिदत्त वेदालकार ने इस विभाग को पल्लवित, पोषित तथा अभिसचित करने में अपने

जीवन को खपा दिया। समृद्ध विरासत का धनी यह विभाग पुरातत्व के शोध में अपनी पहचान बरकरार रख रहा है। वर्तमान में डा० श्यामनारायण सिंह इस विभाग में प्रोफेसर पद पर विराजमान है।

योग विभाग

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की योग प्रोन्नति योजना के अन्तर्गत जन सामान्य की भलाई के लिये योग कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। विद्यालयों मे सम्पर्क करके अध्यापकों तथा छात्रों में योग के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने का महत्वपूर्ण कार्य भी योग विभाग द्वारा अपने हाथ में लिया गया है।

विभाग की उन्नति के लिये योग एव प्राकृतिक चिकित्सा भवन का निर्माण भी कराया जा रहा है। जिससे चिकित्सा तथा शोध कार्य में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हो सकेगी तथा इस प्राच्य योग विद्या को आधुनिकतम रूप में प्रयोग किया जा सकेगा। योग विभाग के छात्र जितेन्द्र कुमार ने अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय योग प्रतियोगिता में शैक्षणिक सत्र १९९७-९८ में स्वर्ण प्राप्त पदक किया है।

मानविकी संकाय

इस सकाय में निम्नाकित विभाग कार्यरत है -

(१) मनोविज्ञान विभाग

(२) हिन्दी विभाग

(३) अग्रेजी विभाग

मनोविज्ञान विभाग

प्रवन्धन शिक्षा के क्षेत्र में कार्मिक प्रवधन का स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम मनोविज्ञान द्वारा ही प्रारम्भ किया गया था। छात्रों को उनके शिक्षण में समाज जीवन की हर धारा से जुडे लोगों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं के अध्ययन हेतु प्रोजेक्ट दिये जाते हैं। विभाग में प्रोफेसर पद पर श्री ओमप्रकाश मिश्र आसीन हैं -

हिन्दी विभाग

हिन्दी विभाग के अंतर्गत पिछले छः वर्षों में हिन्दी पत्रकारिता का नया पाठ्यक्रम चल रहा है। शोधकार्यों में इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि गुरुकुल की पृष्ठभूमि पर आधारित विषयों को प्रोत्साहन दिया जाये। यह उल्लेखनीय है कि तुलनात्मक हिन्दी के जन्मदाता आचार्य पद्मसिंह शर्मा तथा भारतीय भाषा विज्ञान और हिन्दी व्याकरण के मौलिक आचार्य पण्डित किशोरीदास वाजपेयी ने यहाँ अध्यापन कार्य किया। प्राच्य विद्या एव साहित्य जगत् के जाने-माने विद्वान् डा० विष्णुदत्त राकेश इसी विभाग में कार्यरत है।

अंग्रेजी विभाग

अग्रेजी विभाग में लैंगुएज लैब की स्थापना हुई है। जिसमें अनेक आडियो विजुअल उपकरणों द्वारा अग्रेजी भाषा के शिक्षण की विशेष व्यवस्था है। विभाग में प्रोफेसर पद पर डा० नारायण शर्मा सुशोभित है।

विज्ञान संकाय

यह विश्वविद्यालय वैदिक विषयों के अध्यापन के साथ-साथ विज्ञान विषयों का भी शिक्षण कार्य दे रहा है। हिन्दी भाषा में विज्ञान विषयों को पढ़ाने का श्रेय सर्वप्रथम गुरुकुल को ही है। आज इस विश्वविद्यालय में वेद एवं विज्ञान की अनेक शाखाओं के बीच गहन शोध की प्रक्रिया चल रही है। इस संकाय के अन्तर्गत निम्नलिखित विभाग कार्यरत है।

१ गणित विभाग

२. रसायन विभाग

३. भौतिकी विभाग

गणित एवं सांख्यिकी विभाग

गणित की आधुनिकतम् अप्रयोज्य विधाओं यथा अप्लायड नान लिनियर एनालिसिस आप्टीमाइजेशन पर चल रहे अनुसंधानों के अतिरिक्त गणित विभाग वैदिक गणित के शोध आयामों पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहा है, तथा इसी परिप्रेक्ष्य में वैदिक ज्योमैट्री विषय पर ३१-८-९५ को विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। विभाग में प्रोफेसर पद पर डा० श्यामलाल सिंह कार्यरत है।

रसायन विभाग

रसायन विभाग के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में आयुर्वेदिक जडी बूटियों पर आधारित वैदिक साहित्य में रसायन विषय को समाविष्ट किया गया है। इसके फलस्वरूप विभागीय शिक्षक आयुर्वेदिक वनस्पतियों एव औषधियों पर अनुसधान कार्य में सलग्न है।

भौतिकी विभाग

भौतिकी विभाग के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में वैदिक भौतिकी के पाठ्यक्रम का प्रावधान किया गया है। आज यह विभाग गंभीरतापूर्वक अपने शोध क्रियाकलापों में वैदिक भौतिकी के क्षेत्र को चिन्हित करने का प्रयास कर रहा है। विज्ञान के सभी स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में अब कम्प्यूटर प्रयोग का नया पाठ्यक्रम समाविष्ट किया गया है जिससे शोध के कार्य को आधुनिक सूचना तंत्र के साथ जोडा जा सके।

जीव विज्ञान संकाय

जीव विज्ञान संकाय का सृजन १९९३ में किया गया था। इस सकाय के अर्न्तगत निम्नाकित विभाग कार्यरत हैं -

१. जन्तु विभाग एव पर्यावरण विज्ञान

२. वनस्पति विज्ञान विभाग

जन्तु विभाग एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग

१९८४ में यू०जी०सी० द्वारा जन्तु विज्ञान विभाग एव वनस्पति विज्ञान विभाग को संयुक्त रूप से एम०एस०सी० माइक्रोबायोलॉजी का पाठ्यक्रम चलाने जाने की

अनुमति प्रदान की गई थी। क्लीनिकल माइक्रोबायोलाजी के पाठ्यक्रम के कारण बहुत से छात्र स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत अपनी-अपनी पैथोलोजी एवं माइक्रोबायोलोजी लैब चला रहे हैं। प्रोफेसर अध्यक्ष पद पर डा० बी०डी०जोशी कार्यरत हैं।

यू०जी०सी० द्वारा हाल ही में विश्वविद्यालय के जतुविज्ञान विभाग को पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चलाये जाने की अनुमति प्राप्त हुई है। आज पर्यावरण की सुरक्षा राष्ट्र की ज्वलंत समस्या है। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति सजग प्रहरी के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकता है। आज विश्वविद्यालय का जतु एव पर्यावरण विभाग वैदिक पर्यावरण की इस गंभीर सोच पर अपने शोध को केन्द्रित कर सकता है। विभाग द्वारा गत वर्ष इसी प्रसग में डा० बी०डी०जोशी द्वारा लिखित वैदिक पर्यावरण विज्ञान से सम्बद्ध पुस्तिका का प्रकाशन 'ग्लिम्सेज आफ एनवायरनमेंटल परसेप्सन इन वैदिक लिटरेचर' नाम से किया गया।

वनस्पति विज्ञान विभाग

विश्वविद्यालय का वनस्पति विभाग वैदिक वनस्पति शास्त्र में समाहित पेड, पौधो प्रजातियों एव जडी-बूटियों के परिप्रेक्ष्य में अपनी शोध परियोजनाओं को चिन्हित करने का प्रयास में सलग्न है। प्रोफेसर पद को डा० डी०के० माहेश्वरी सुशोभित कर रहे हैं। औषधियो पौधों का मानव रोगों के उपचार हेतु प्राथमिक मूल्याकन पर गहन शोध-कार्य चल रहा है। इसके अतिरिक्त पौधों के लिये आवश्यक सूक्ष्म जैव-उर्वरक एव सूक्ष्म जैव नियन्त्रण पर अनेक शोध परियोजनायें चल रही हैं।

प्रबन्धन संकाय

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार प्रबध शिक्षा के क्षेत्र में दिनोंदिन प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है। इस विश्वविद्यालय में प्रबंध शिक्षा का शुभारम्भ वर्तमान कुलपति डा० धर्मपाल के प्रगतिशील विचारों की देन है। उन्हीं के प्रयासों से कार्मिक प्रबन्ध एव औद्योगिक सम्बन्ध में स्नातकोत्तर डिप्लोमा तीन वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया गया जिसके छात्रों के दो बैच परीक्षा भी उत्तीर्ण कर चुके हैं। जिनमें से अधिकाश छात्र विभिन्न सगठनों में सेवारत हैं। पिछले वर्ष अक्टूबर ९६ से एम०बी०ए० पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के साथ विश्वविद्यालय में प्रबन्ध सकाय का प्रादुर्भाव हुआ। वर्तमान समय में प्रबन्धन सकाय में दो पाठ्यक्रम एम०बी०ए० एव कार्मिक प्रबन्ध चलाये जा रहे हैं। एम०बी०ए० पाठ्यक्रम अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से मान्यता प्राप्त है। ये दोनों पाठ्यक्रम छात्र एव छात्राओं, दोनों के लिये उपलब्ध हैं। एम०बी०ए० पाठ्यक्रम के अन्तर्गत (क) विपणन, (ख) उत्पादन, (ग) कार्मिक प्रबन्ध, (घ) वित्त सामान्य व्यापार क्षेत्रों में स्पेस्लाइजेशन दिये जा रहे हैं। संकाय में छात्रों के प्रयोग हेतु आधुनिकतम कम्प्यूटर लैब, आडियो विजुअल लैब, ओवर हैड स्लाइड प्रोजैक्टर, विभागीय पुस्तकालय आदि सुविधाए उपलब्ध कराई जा रही है।

प्रबन्ध शिक्षा के विस्तार हेतु टूरिज्म एवं होटल प्रबन्ध, वित्तीय प्रबन्ध, वित्तीय प्रबन्ध एव उत्पादन में तीन एक वर्षीय डिप्लोमा आदि नये पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की योजना है। विश्वविद्यालय प्रबन्ध शिक्षा के अन्तर्गत वैदिक साहित्य में उपलब्ध प्रबन्धन सूत्रों को सामाहित करेगा। वैदिक प्रबन्धन तंत्र प्रबन्ध शिक्षा में नये आयामों को उद्घाटित करने में सामर्थ्यवान है।

प्रौद्योगिकी संकाय

विश्वविद्यालय में तकनीकी विषयों के विकास एवं संवर्धन हेतु हाल में इस नये संकाय का गठन किया गया। इस संकाय के अंतर्गत निम्नांकित विभाग कार्य कर रहे हैं।

१. कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

२. कम्प्यूटर केन्द्र

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

कम्प्यूटर विज्ञान विभाग विगत ६ वर्षों से कम्प्यूटरीय शिक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विभाग द्वारा अत्याधुनिक पाठ्यक्रम एम०सी०ए० (त्रिवर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम) चलाने के अतिरिक्त विश्वविद्यालयों के अन्य पाठ्यक्रमों में कम्प्यूटर शिक्षा का समावेश अब प्रत्येक स्तर पर किया गया है। अलंकार, बी०ए०, बी०एस०सी०, एम०बी०ए०, पी०एम०आई०आर० आदि पाठ्यक्रमों को कम्प्यूटर शिक्षा के साथ जोडा गया है। एम०सी०ए० पाठ्यक्रम छात्र एवं छात्राओं दोनों के लिये उपलब्ध है। कम्प्यूटर विज्ञान विभाग वैदिक ज्योमिति के सिद्धान्तों का आधुनिक कम्प्यूटर टेक्नोलोजी में प्रयोग पर भी कार्य योजना तैयार कर रहा है। "प्राचीन साहित्य में वर्णित सचार साधन एव उनका आधुनिक कम्प्यूटर सचार साधनों पर प्रभाव" विषय पर शोध परियोजना जारी है। संस्कृत भाषा एवं निरुक्त के कम्प्यूटर में प्रयोग पर शोध कराये जाने की योजना बनाई जा रही है। इसके अतिरिक्त पूरे विश्वविद्यालय को कम्प्यूटरीकृत करने का प्रयास जारी है, तथा विद्यालय विभाग में छात्रों के पठन-पाठन में कम्प्यूटर विषय का समावेश किया गया है, तथा कम्प्यूटर के द्वारा महाविद्यालय के शिक्षकों के लिये अल्पावधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन विगत वर्षों में हुआ। इस वर्ष विभाग में इन्टरनेट भी स्थापित हो रहा है। हाल ही में प्रो० विनोद कुमार के निर्देशन में अखिल भारतीय तकनीकी परिषद द्वारा 'परफारमेन्स इवेल्यूएशन एण्ड एनहान्समेन्ट आफ डिस्ट्रीब्यूटेड एलगारिथ्मस' विषय पर एक वृहत् शोध परियोजना स्वीकृत हुई है तथा बहुससाधक पर आधारित कम्प्यूटर खरीदने हेतु १२.५० लाख रु० स्वीकृत हुआ है।

कम्प्यूटर केन्द्र

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में कम्प्यूटर केन्द्र की स्थापना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त अनुदान से १९८६ में की गई। वर्तमान केन्द्र में ५० लाख रुपये लगभग के आधुनिक कम्प्यूटर सयत्र एवं साफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिसे एम०सी०ए०, एम०एस०सी०, बी०एस०सी० और बी०ए० के छात्र प्रयोग में ला रहे हैं।

कम्प्यूटर केन्द्र में क्रय किये गये लगभग २४ लाख रुपये के अत्याधुनिक कम्प्यूटर उपकरणों को स्थापित कर चालू कर दिया है। जिसमें तेइस ४८६ एस एक्स कम्प्यूटर तथा एक ४८६ डी एक्स, दो डोस नेटवर्क के लिये एवं विभिन्न प्रकार के आधुनिक प्रिंटर्स और स्कैनर्स शामिल हैं। इन उपकरणों में यूनिक्स एनवायरमेंट की आवश्यकता की पूर्ति के लिये ६४ बिट का एल्फा सयत्र भी शामिल है जो कि इस क्षेत्र का सबसे आधुनिक उपकरण है। पुराने कम्प्यूटर उपकरणों के लिये पैरिफरल कार्डस खरीदे गये हैं और उन्हें नेटवर्क से जोड

दिया गया है। अब केन्द्र में नोवल, विन्डो, एन०टी० व यूनिक्स तीनों प्रकार के नेटवर्क एनवायरनमेंट उपलब्ध है।

मुख्य कार्यालय में कम्प्यूटर सैल बनाकर लैब का निर्माण किया गया है, इससे मुख्य कार्यालय की कम्प्यूटर सबधी आवश्यकता की पूर्ति की जा रही है।

नये सत्र में विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के लिये कम्प्यूटर के प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु योजना बनाई जा रही है। केन्द्र में दूरस्थ शिक्षा विभाग एव कार्मिक प्रबन्ध तथा औद्योगिक सबध में स्नातकोत्तर डिप्लोमा मे कम्प्यूटर शिक्षा की कक्षाओं का आयोजन किया गया।

कन्याओं के शिक्षण हेतु विश्वविद्यालय के निम्नाकित महाविद्यालयों में अब अध्ययन की विशेष व्यवस्था है -

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार (अंगभूत महाविद्यालय)

एम०ए० (सस्कृत, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एव पुरातत्व, हिन्दी, अग्रेजी, मनोविज्ञान) एम०एस०सी० (गणित, भौतिक, रसायन, माइक्रोबायोलोजी तथा पर्यावरण) स्त्री शिक्षा आर्य समाज के प्रधान कार्यों में वरीयता प्राप्त है। ऋषि दयानन्द ने छात्रों की भाति छात्राओं के भी अध्ययन की व्यवस्था करने की घोषणा की थी। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में बहुत पूर्व ही छात्राओं की शिक्षा के लिए कन्या गुरुकुल देहरादून की स्थापना की थी, परन्तु हरिद्वार में छात्राओं की स्नातकोत्तर कक्षाओं एव शोध की अत्यत कमी अनुभव की जा रही थी। अब से लगभग पाच वर्ष पूर्व हरिद्वार के एक किराये के भवन में एम०ए० की कक्षाओं की व्यवस्था प्रारम्भ की गई। परन्तु फिर भी विज्ञान की छात्राओ की कमी रह गई थी।

अब महाविद्यालय का अपना पृथक् परिसर बन गया है। उस परिसर में मुख्य भवन, व्याख्यान कक्ष, प्रयोगशाला भवन, पुस्तकालय भवन निर्मित हो गये है। शिक्षण की सुचारू व्यवस्था है। सम्प्रति सस्कृत, हिन्दी, अग्रेजी, मनोविज्ञान, इतिहास, गणित, भौतिकी, रसायन, माइक्रोबायोलोजी तथा पर्यावरण विज्ञान एवं एम०बी०ए० की स्नातकोत्तर कक्षाएं चल रही है। एक वर्ष से शोध कार्य भी प्रारम्भ करा दिया गया है। महाविद्यालय में एक पुस्तकालय भी है। जिसकी पृथक व्यवस्था की गई है भविष्य में इस पुस्तकालय के और अधिक विस्तार किये जाने की योजना है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून (अंगभूत महाविद्यालय द्वितीय परिसर)

अलंकार/विद्यालंकार - त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम

एम०ए० (हिन्दी, सस्कृत, अग्रेजी), एम०सी०ए० (कम्प्यूटर विज्ञान) एम०बी०ए० (प्रबन्ध शिक्षा) तथा पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन पर्सनल मैनेजमेंट एण्ड इण्डस्ट्रियल रिलेशन (पी०एम०आई०आर०)

विश्वविद्यालय का शारीरिक शिक्षा विभाग

विश्वविद्यालय के छात्रों को जहां उनके बौद्धिक विकास हेतु पठन-पाठन के रूप में बौद्धिक सम्पदा उपलब्ध कराई जा रही है वहां उनके शारीरिक विकास हेतु खेलकूद, जिम्नास्टिक, व्यायाम, योग, तैरना आदि उनके शारीरिक विकास पर बल दिया जाता है। शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा छात्रों को कुश्ती, चैम्पियनशिप

प्रतियोगिता बैडमिंटन प्रतियोगिता, बालीबाल एवं फुटबाल प्रतियोगिता आदि मे भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है, खेल कूद के क्षेत्र में छात्रों ने अनेक अवसरों पर अच्छे प्रदर्शन का परिचय दिया है।

निम्नांकित अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया -

१. अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता (२१.१२.६५-२२.१२.६५)

२ उत्तर क्षेत्र अन्तर्विश्वविद्यालय वालीबाल प्रतियोगिता (८.११.६५-१२.११ ६५)

३. अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय स्क्वैश रैकिट प्रतियोगिता का आयोजन (२४.१२.६४-२७.१२.६४)

प्रौढ़ सतत् शिक्षा प्रसार विभाग

विश्वविद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा एवं प्रसार विभाग द्वारा निम्नांकित कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं -

१ जन शिक्षण निलयम्

२. सतत शिक्षा कोर्स

३. जनसंख्या शिक्षा क्लब

४. साक्षरता कार्यक्रम

स्वीकृत शोध परियोजनायें

विश्वविद्यालय के अनेक प्राध्यापकों को विदेशों में भी विशिष्ट व्याख्यानों के लिये आमंत्रित किया गया है। इसके साथ ही विश्वविद्यालय के अनेक विभागों को यू०जी०सी०, सी०एस०आई०आर०, सी०एस०के०, डी०एस०टी० द्वारा विशेष प्रोजेक्ट दिये गये हैं। वेद विभाग के अन्तर्गत डा० रूप किशोर शास्त्री को 'वैदिक वाङ्मय निर्वचन कोष' परियोजना की स्वीकृति दी गई है, इस पर कार्य अन्तिम चरण में है। निर्वचन परम्परा का यह कोष समस्त वैदिक साहित्य में विद्यमान प्रत्यक्ष वृत्ति, परोक्ष वृत्ति, अतिपरोक्ष वृत्तिका निर्वहन एवं प्रतिनिधित्व करेगा। शोध पूर्ण तरीके से इसका संग्रह हो जाने पर वेद मंत्रों का समझना और सरल हो जायेगा। इसी प्रकार वेद विभाग के एक अन्य प्राध्यापक डा० दिनेश कुमार शास्त्री को भी यू०जी०सी० से वैदिक उपमाकोष पर प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया है। भारतीय समाज विज्ञान परिषद द्वारा मनोविज्ञान विभाग को भी शोध प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया है। हाल ही में यू०जी०सी० द्वारा विश्वविद्यालय से जन्तु एवं पर्यावरण विभाग को भी इसी वर्ष तीन बडी परियोजनायें स्वीकृत है, जिसमें निम्नांकित प्रमुख रूप से हैं-

(१) कुछ पक्षी प्रजातियों में ध्वनि संकेत की विशेषताएं एवं उनका महत्व विषय पर लगभग ६ लाख रुपये की योजना को तीन वर्ष हेतु स्वीकृति प्रदान हुई है।

(२) भारतीय वन शिक्षा एवं अनुसंधान परिषद से "राजाजी नेशनल पार्क के अंतर्गत मोतीचूर वनप्रभाग में बदलते पर्यावरण एवं मानवीय क्रियाओ का

धरातलीय कीटों की विविधता पर प्रभाव" विषय पर तीन वर्ष हेतु लगभग ४ लाख रुपये की स्वीकृति प्राप्त हुई है।

(३) पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय से शिवालिक पर्वत श्रृंखला की नष्ट होती वनस्पतियों के सरक्षण हेतु सरक्षित वानस्पतिक उद्यमन हेतु ५ लाख रुपये की योजना स्वीकृत हुई है।

गंगा एव हिमालय में हो रहा प्रदूषण के विषय में विशिष्ट अनुसंधान कार्य किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के वनस्पति विभाग को भी शोध परियोजनाओं हेतु अनुदान स्वीकृत किया गया है। विश्वविद्यालय के भौतिक एव रसायन के शिक्षकों को विभिन्न शोध परियोजनाओं के अंतर्गत स्वीकृति प्राप्त हुई है जो कि विश्वविद्यालय के चहुँमुखी विकास को रेखांकित करती है।

विश्वविद्यालय के नवनिर्मित भवन

१. रसायन विज्ञान की नई प्रयोगशाला का निर्माण।
२. भौतिकी विभाग की नई प्रयोगशाला का निर्माण।
३. मुख्य कार्यालय का विस्तार।
४. कम्प्यूटर विभाग की नई प्रयोगशाला।
५. मुख्य अतिथि गृह में नव निर्माण कार्य।
६. विश्वविद्यालय परिसर में सुरक्षा चौकियों तथा सुरक्षाधिकारी कार्यालय का निर्माण।
७ कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून में कम्प्यूटर प्रयोगशाला, अध्यापन कक्ष तथा छात्राओं के छात्रावास का निर्माण कार्य, प्रबन्धन विभाग के भवन का निर्माण।
८ मानविकी संकाय का निर्माण।
९. विज्ञान संकाय तथा जीवविज्ञान संकाय में अध्यापन कक्षों का निर्माण।
१०. शिक्षकोत्तर कर्मचारियों के आवास भवनों का निर्माण।
११. कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार हेतु पृथक् भवन निर्माण कार्य सम्पन्न।
१२. विज्ञान प्रयोगशाला का निर्माण कार्य सम्पन्न (१९९६-९७)
१३. पुरातत्व सग्रहालय के भवन का विस्तार।
१४. छात्रावास में अतिरिक्त कमरों का निर्माण (१९९६-९७)।

नये पाठ्यक्रम :

कुलपति डा० धर्मपाल जी आर्य के उद्योग से विश्वविद्यालय में निम्नांकित नये पाठ्यक्रमों का समावेश किया गया।

१. पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन पर्सनल मैनेजमेंट एड इन्डस्ट्रियल रिलेशन (१९९४-९५)
२. योग में स्नातकोत्तर कक्षाओं का प्रारम्भ (१९९४-९५)
३. रसायन विभाग में स्नातकोत्तर कक्षाओं का प्रारम्भ (१९९४-९५)
४. इन्डस्ट्रियल माइक्रोबायोलोजी विषय का समावेश (१९९४-९५)
५. बी०ए० कक्षाओं हेतु कम्प्यूटर पाठ्यक्रम लागू किया जाना (१९९४-९५)
६. सुदूर शिक्षा के अंतर्गत "कम्प्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा" पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की स्वीकृति दी गई (१९९४-९५)
७. बी०ए० एवं बी०एस०सी० के सभी छात्रों हेतु धर्म, दर्शन एवं संस्कृति का अनिवार्य पाठ्यक्रम प्रारम्भ (१९९५-९६)

८. बी०एस०सी० पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा के अंतर्गत प्रारम्भ (१९९५-९६)
९. एम०सी०सी० भौतिकी में वैदिक भौतिकी के नये पाठ्यक्रम का प्रारम्भ (१९९५-९६)
१०. कन्या महाविद्यालय हरिद्वार में स्नातकोत्तर विज्ञान विषयों में पाठ्यक्रम की सुविधा का आरम्भ (रसायन, पर्यावरण, भौतिकी, सूक्ष्म जीवविज्ञान) (१९९५-९६)
११. पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर कक्षाओं का प्रारम्भ (१९९५-९६)
१२. सुदूर शिक्षा के अंतर्गत स्नातक स्तर पर कम्प्यूटर पाठ्यक्रम का प्रारम्भ (१९९५-९६)
१३. स्नातक स्तर पर पुरातत्व एवं संग्रहालय विज्ञान का व्यावसायिक पाठ्यक्रम (१९९४-९५)
१४. व्यावहारिक हिन्दी का व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्रारम्भ (१९९५-९६)
१५. कम्यूनिकेटिव अंग्रेजी के व्यावसायिक पाठ्यक्रम का समावेश (१९९५-९६)

गुरुकुल - राष्ट्रीय विचारकों की दृष्टि में

"आर्य समाज का सबसे अच्छा फल गुरुकुल की स्थापना और उसे चलाने में दिखता है। उसका प्रभाव महात्मा मुशीराम जी की उत्साह बढ़ाने वाली मौजूदगी के कारण है। फिर भी यह सच्ची राष्ट्रीय, स्वतंत्र और स्वाधीन संस्था है। उसे सरकार की सहायता या सहानुभूति जरा भी नहीं मिलती।"

-महात्मा गांधी

"मैंने गुरुकुल को देखा तथा यहां की कार्यप्रणाली की जानकारी ली। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह सस्था, अच्छा कार्य कर रही है। इस अवसर पर मैं इस बात पर जोर देना चाहूँगा कि देश के सास्कृतिक आदर्शों की रक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को भी तरजीह देनी चाहिए क्योंकि आज की दुनिया को इनकी बड़ी जरूरत है। इन्हीं दोनों के समन्वय से हमारा भाग्य सुरक्षित रह सकता है।"

-पंडित जवाहरलाल नेहरु

"आपका गुरुकुल एक प्राचीन ढग पर चलने वाला नये प्रकार का विद्यालय रहा है। सारे देश में अग्रेजी का बोलवाला था और सभी विद्यालयों में अंग्रेजी के माध्यम द्वारा ही शिक्षा दी जा रही थी। आपके दूरदर्शी संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दी के माध्यम द्वारा उच्च कोटि की शिक्षा देने का निश्चय किया और इस संस्था को आज से ५० वर्ष पूर्व स्थापित किया। इन ५० वर्षों के प्रयोग से यह प्रमाणित हो कि उच्च कोटि की शिक्षा भी हिन्दी द्वारा दी जा रही है।"

-महामहिम डा० राजेन्द्र प्रसाद

"यह शिक्षण संस्था है तो यहां हर एक चीज अनुकरण करने लायक होनी चाहिए। भोजन कब और कैसे करना चाहिए तो जैसा गुरुकुल में किया जाता है वैसा, काम कैसे करना चाहिए, बैठना कैसे चाहिए, सोना कब चाहिये तो जैसे गुरुकुल में होता है"

-आचार्य श्री विनोबा भावे

"आपने गुरुकुल के द्वारा नया प्रयोग किया है। वर्तमान काल की व्यवस्था से प्राचीन आदर्शों को सामने रखकर एक विश्वविद्यालय चला रहे हैं। आजकल

पाश्चात्य ढग से विश्वविद्यालय होने चाहिए जैसे कि बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी है, या पुराने ढंग के गुरुकुल। यह एक विवादास्पद प्रश्न है। इसलिये वे सब लोग जो इस देश की शिक्षा में अभिरुचि रखते हैं, आपके इस प्रयोग को जिसके द्वारा आपने प्राची और प्रतीची, दर्शन और विज्ञान के समन्वय करनेका प्रयत्न किया है उत्सुकता से देखते हैं।"

-डा० सम्पूर्णानन्द

"गुरुकुल अपने विद्यार्थियों को किसी खास रुचि में नहीं डालता है। विश्वविद्यालय का भाव सदा उदार और उन्मुक्त होता है। विश्वविद्यालय के अध्यापक अपने विद्यार्थियों को इस बात का पूरा मौका देते हैं कि वे सब पक्षों के मत को सुनकर अपना स्वतत्र मत निश्चित कर सकें। धार्मिक क्षेत्र में भी गुरुकुल का उदार भाव रहा है। यहां केवल वैदिक धर्म की ही शिक्षा नहीं दी जाती है, यहाँ विद्यार्थियों को विविध धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन कराया जाता है।"

-श्री आचार्य नरेन्द्र देव

"आपकी महान सस्था भारतीय शिक्षा समस्या को हल करने में बहुत सहायक होगी। शिक्षा के क्षेत्र में सकुचित तथा कठोर व्यवस्थाओं और नियमों का अवलम्बन शिक्षा को नाश करने वाला होता है। यह उसके जीवन पर कुठाराघात करता है। आपके गुरुकुल ने परीक्षण द्वारा यह दिखा दिया है कि इस देश में शिक्षा भारतीय सभ्यता के मौलिक अंगों तथा वैज्ञानिक युग की आवश्यकताओं में उचित सामजस्य स्थापित करके दी जा सकती है।"

- डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी

विशिष्ट अतिथि एवं विद्वानों का आगमन

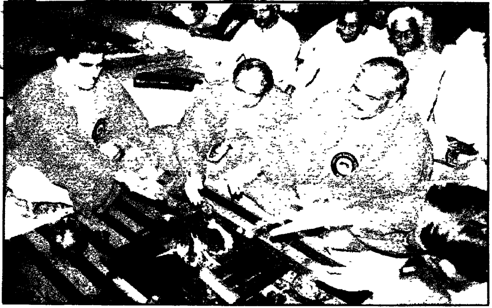
गुरुकुल के १०० वर्षों के इतिहास में समय-समय पर पधारने वाले विद्वानों की लम्बी सूची है। राष्ट्र धारा से जुड़े सभी प्रमुख राजनेता, विद्वान अध्येता, दार्शनिक, चिंतक, समाज सुधारक सभी वर्गों के चोटी के शिखर पुरुष गुरुकुल में आये। इनमें प्रमुख नाम हैं -

महात्मा गांधी, डा० राजेन्द्र प्रसाद, डा० कालिदास नाग, डा० सम्पूर्णानन्द, टी०एल० वास्वानी, आचार्य नरेन्द्र देव, आचार्य विनोवा भावे, प० जवाहरलाल नेहरू, प० मदनमोहन मालवीय, डा० राधाकृष्णन्, खान अब्दुल गफ्फार खान, चिन्तामणि वैद्य, डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी, डा० सी०डी० देशपाण्डे, सत निहाल सिंह, डा० गोकल चंद नारंग, गुरुदेव रविन्द्र नाथ ठाकुर, डा० गोविन्द वल्लभ पंत, आचार्य क्षिति मोहन सेन, नरहरि विष्णु गाडगिल, मोरारजी देसाई, श्रीमती इंदिरा गांधी तथा बाबू जगजीवन राम।

गत ५ वर्षों में जिन प्रमुख हस्तियों ने गुरुकुल को पास से देखा है उनमें प्रमुख है श्री चन्द्रशेखर, डा० कर्णसिंह, डा० शिवराज पाटिल, डा० राजा रमन्ना, श्री मदनलाल खुराना, साहिब सिह वर्मा, श्री राजेन्द्र गुप्ता, डा० ओदोलेन स्मेकल, ओक स्वास्तिका एवं डा० ओलेग उलत्सिफेरोव।



पुस्तकालय अध्ययन कक्ष



दीक्षान्त यज्ञ का प्रारम्भ करते हुए बायें
श्री सूर्यदेव-कुलाधिपति
डा० एस०एन०सिंह-कुलसचिव
डा० धर्मपाल-कुलपति



गुरुकुल के दीक्षान्त भाषणों का सकलन
दीक्षालोक का विमोचन बायें से
श्री सूर्यदेव-कुलाधिपति,
डा० ओलेग उल्त्सिफेरोव-रूसी विद्वान,
डा० धर्मपाल-कुलपति,
डा०विष्णुदत्त राकेश-निदेशक,
श्रद्धानद प्रकाशन, श्री गगा प्रसाद
विमल-निदेशक केन्द्रीय
हिन्दी निदेशालय,
डा० जगदीश विद्यालकार, पुस्तकालयाध्यक्ष



पुरातत्व सग्रहालय

कम्पोजिंग, डिजाईनिंग एवं प्रिंटिंग : देश कम्प्यूटर्स एण्ड पब्लिशर्स, २ ललतारो पुल, रेलवे रोड़, हरिद्वार, फोन : ०१३३-४२६६४८, फैक्स : ४२२५०७